PGK Mandal's

Haribhai V. Desai College, Pune

Department of English

Translation Competition

On the occasion of

Rabindranath Tagore Birth Anniversary

7 May 2021

Evaluation Sheet

Sr. No	Name of the student	Name of the college	Title of the poem / short story translated	Comprehension of the text	Target lg. sentence construction	Grammar	Punctuation	Flow of the translation	Total Marks
1	Chandrakant Ramlu Gardas	Walchand College Of Arts and Science,Solapur.	Where the Mind is without Fear	8	8	8	8	9	41
2	Rajendra Dinkar Hingane	Bhausaheb Jadhav College of Arts, Commerce and Science, Ale.	Hungry Stones	9	7	7	7	8	38
3	Pooja Balaji Vanshete	H. V. Desai College, Pune	This Is Nothing but Thy Love	7	5	5	4	3	24

4	Chavan Mangeshkumar Kashinath	Abasaheb Garaware College, Pune	Vidrohi	**Copy Paste from internet (Disqualified)**						
5	Desai Nikita Nandkumar	H.V. Desai College, Pune	Where the Mind is without Fear	**6**	**5**	**5**	**5**	**5**	26	
6	Kailash Dadoo Ranpise	Abasaheb Garaware College, Pune	Who is this?	**8**	**8**	**7**	7	**7**	**37**	
7	Sourabh Shivaji Anbhule	Walchand College Of Arts and Science,Solapur.	Free love	**3 Summary provided not translation**	**2**	**2**	**2**	**2**	**11**	
8	Suyog Walawalkar	H. V. Desai College, Pune	Free love	**6**	**6**	**5**	**5**	**6**	**28**	
9	Pooja Bansode	Walchand College Of Arts and Science,Solapur	Leave this chanting and Singing	**9**	**6**	**7**	**5**	**5**	**32**	
10	Lange Pooja	Abasaheb Garaware College, Pune	Where the Mind is without Fear	**2**	**3**	**2**	**3**	**3**	**13**	
11	RutujaPatil	Haribhai V. Desai College, Pune	Paper Boats	**5**	**3**	**3**	**3**	**3**	**17**	
12	Revati Joshi	Abasaheb Garaware College, Pune	Kabuliwala	**Copy Paste from internet (Disqualified)**						
13	Janhvi Nimbarte	Haribhai V. Desai College, Pune	Where the Mind is without Fear	7	**7**	**6**	**7**	**4**	**31**	

14	Jyotsna Bondage	Haribhai V. Desai College, Pune	Let my Country Awake	**5**	**6**	**5**	**5**	**5**	**26**
15	Ashwini Shinde	Abasaheb Garaware College, Pune	Where the Mind is without Fear						
16	Khatal Priyanka Jagannth.	Abeda Inamdar College	On the Nature of Love	**5**	**4**	**6**	**4**	**3**	**22**
17	Amruta Angaj	New Law College, Kolhapur	Where the mind is without Fear	**7**	**6**	**7**	**7**	**7**	**34**
18	Aishwarya Wadtile	Walchand College Of Arts and Science,Solapur	Kabuliwala	(copy paste from internet) **Disqualified**					
19	Nikita Desai	Haribhai V. Desai College, Pune	Gitanjali	**4**	**4**	**3**	**3**	**3**	**17**

Amruta Sunil Angaj,9766092706,
amrutaangaj44@gmail.com

Gitanjali

Where the mind is without Fear...

Where the mind is without Fear
and the head is held high;
Where knowledge is free;
Where the world has not been broken up
into Fragments by narrow domestic walls;
Where words come out from the depth of truth;
Where tireless striving stretches its arms
towards perfection;
Where the clear stream of reason
has not lost its way
into the dreary desert sand of dead habit;
Where the mind is led forward by thee
into ever windening thought and action
into that heaven of freedom, my father,
let my country awake.

भयशून्य चित्त जेथे...

जिथं, मन नेहेमी निर्भय असतं आणि मान अभिमानानं

ताठ उभी असते ,

जिथं ज्ञान सगळया बंधनांच्या पलीकडे, असते, मुक्त असते,

जिथं घरांच्या छोट्या छोट्या संकुचित भिंती विश्वाला तुकड्या

तुकड्यात विभागत नाहीत,

जिथं सत्याच्या पायवर शब्दांची शिखंर बांधली जातात,

जिथं दिशा दिशातून अविरत प्रयत्नांचे हजारो स्त्रोत न थकता

परमोत्तम आदर्शाकिडे वाहतात,

जिथं शुद्ध , सर्जनशील विचारांच्या झरा अंध परंपरांच्या

शुष्क वाळवंटात सुकून जात नाही,

हरवून जात नाही,

जिथं तू नेता आहेस , तू मनाला विचारांच्या आणि

कर्माच्या नित्य विस्तारत जात असलेल्या क्षितिजांची ओळख
करुन देतोस,

हे पितृदेवा! त्या सदामुक्त स्वर्गात माझ्या देशाला

जागृत होऊ दे !

NAME- Janhvi Ravindra Nimbarte
CLASS- SYBA (A)
EMAIL ID- janhvinimbarte23@gmail.com
PHONE NO. - 7499251403
COLLEGE NAME- Haribhai V. Desai College, Pune-02
TRANSLATION- Poem
(Where the mind is without fear)

WHERE THE MIND IS WITHOUT FEAR

-Rabindranath Tagore

Where the mind Is without fear and the
head is held high
Where knowledge is free
Where the world has not been broken up
into fragments
By narrow domestic walls
Where words come out from the depth of
truth
Where tireless striving stretches its arms
towards perfection
Where the clear stream of reason has not
lost its way
Into the dreary desert sand of dead habit
Where the mind Is led forward by thee
Into ever-widening thought and action
Into that heaven of freedom, my Father,
let my country awake.

जिथं मन नेहमी निर्भय असतं

- रवींद्रनाथ टागोर

जिथं मन नेहमी निर्भय असतं आणि मान अभिमानाने ताठ उभी असते

जिथं ज्ञान मुक्त असतं सगळ्या बंधनांच्या पलीकडे असतं

जिथं घराच्या छोट्या-छोट्या संकुचित भिंती विश्वाला तुकड्या-तुकड्यात विभागात नाहीत

जिथं सत्याच्या पायावर शब्दांची शिखरं बांधली जातात

जिथं दिशा दिशातुन अविरत प्रयत्नांचे हजारो स्त्रोत न थकता परमोत्तम आदर्शाकडे वाहतात

जिथं शुद्ध, सर्जनशील विचारांचा झरा अंध परंपरांच्या शुष्क वाळवंटात सुकून जात नाही, हरवून जात नाही

जिथं तू नेता आहेस, तू मनाला विचारांच्या आणि कर्माच्या नित्य विस्तारत जाणाऱ्या क्षितीजांची ओळख करून देतोस

हे पितृदेवा! त्या सदामुक्त स्वर्गात माझ्या देशाला जागृत होऊ दे.

Name - Joshi Revati Kamlesh
class - FYBA
College Name - Abasaheb Garware College, Pune
Email ID - revatijoshi32@gmail.com
Cell no. - 9373505301

काबुलीवाला

मेरी पाँच वर्ष की छोटी लड़की मिनी से पल भर भी बात किए बिना नहीं रहा जाता। दुनिया में आने के बाद भाषा सीखने में उसने सिर्फ एक ही वर्ष लगाया होगा। उसके बाद से जितनी देर तक सो नहीं पाती है, उस समय का एक पल भी वह चुप्पी में नहीं खोती। उसकी माता बहुधा डाँट-फटकार कर उसकी चलती हुई ज़ुबान बंद कर देती है; किन्तु मुझसे ऐसा नहीं होता। मिनी का मौन मुझे ऐसा अस्वाभाविक-सा प्रतीत होता है, कि मुझसे वह अधिक देर तक सहा नहीं जाता और यही कारण है कि मेरे साथ उसके भावों का आदान-प्रदान कुछ अधिक उत्साह के साथ होता रहता है।
सवेरे मैंने अपने उपन्यास के सत्तरहवें अध्याय में हाथ लगाया ही था कि इतने में मिनी ने आकर कहना आरम्भ कर दिया, "बाबा! रामदयाल दरबान कल 'काक' को कौआ कहता था। वह कुछ भी नहीं जानता, है न बाबा ?"
विश्व की भाषाओं की विभिन्नता के विषय में मेरे कुछ बताने से पहले ही उसने दूसरा प्रसंग छेड़ दिया, "बाबा! भोला कहता था आकाश मुँह से पानी फेंकता है, इसी से वर्षा होती है। अच्छा बाबा, भोला झूठ-मूठ कहता है न? खाली बक-बक किया करता है, दिन-रात बकता रहता है।"
इस विषय में मेरी राय की तनिक भी राह न देख कर, चट से धीमे स्वर में एक जटिल प्रश्न कर बैठी, "बाबूजी, माँ तुम्हारी कौन लगती है?"
उसके इस प्रश्न का उत्तर देना, किसी भंवर में फंसने बराबर था इसलिए मैंने उसका ध्यान हटाने के लिए कहा, "मिनी, तू जा, भोला के साथ खेल, मुझे अभी काम है, अच्छा।"
तब उसने मेरी मेज के पार्श्व में पैरों के पास बैठकर अपने दोनों घुटने और हाथों को हिला-हिलाकर बड़ी शीघ्रता से मुंह चलाकर 'अटकन-बटकन दही चटाके' कहना आरम्भ कर दिया। जबकि मेरे उपन्यास के अध्याय में प्रतापसिंह उस समय कंचनमाला को लेकर रात के गहरे अँधेरे में बंदीगृह के ऊंचे झरोखे से नीचे कलकल करती हुई सरिता में कूद रहा था।
मेरा घर सड़क के किनारे पर था, सहसा मिनी अपने अटकन-बटकन को छोड़कर कमरे की खिड़की के पास दौड़ गई, और जोर-जोर से चिल्लाने लगी, "काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला"...
मैले-कुचैले ढीले कपड़े पहने, सिर पर साफा बाँधे, कंधे पर सूखे फलों की मैली झोली लटकाए, हाथ में अंगूरों की कुछ पिटारियाँ लिए, एक लम्बा-तगड़ा-सा काबुली धीमी सी चाल से सड़क पर जा रहा था। उसे देखकर मेरी छोटी बेटी के हृदय में कैसे भाव उदय हुए यह बताना असम्भव है। उसने जोरों से पुकारना शुरू किया। मैंने सोचा, अभी झोली कंधे पर डाले, सर पर एक मुसीबत आ खड़ी होगी और मेरा सत्तहरवा अध्याय आज अधूरा रह जाएगा।
किन्तु मिनी के चिल्लाने पर ज्यों ही काबुली ने हँसते हुए उसकी ओर मुँह फेरा और घर की ओर बढ़ने लगा; त्यों ही मिनी भय खाकर भीतर भाग गई। फिर उसका पता ही नहीं लगा कि कहाँ छिप गई। उसके छोटे-से मन में वह अन्धविश्वास बैठ गया था कि उस मैली-कुचैली झोली के अन्दर ढूँढ़ने पर उस जैसी और भी जीती-जागती बच्चियाँ निकल सकती हैं।

इधर काबुली ने आकर मुसकराते हुए मुझे सलाम किया।। मैंने सोचा, वास्तव में प्रतापसिंह और कंचनमाला की दशा अत्यन्त संकटापन्न है, फिर भी घर में बुलाकर इससे कुछ न खरीदना अच्छा न होगा।
कुछ सौदा खरीदा गया। उसके बाद मैं उससे इधर-उधर की बातें करने लगा। खुद रहमत, रूस, अंग्रेज, सीमान्त रक्षा के बारे में गप-शप होने लगी।
आखिर में उठकर जाते हुए उसने अपनी मिली-जुली भाषा में पूछा, "बाबूजी, आपकी बच्ची कहाँ गई?"
मैंने मिनी के मन से व्यर्थ का भय दूर करने के लिए उसे भीतर से बुलवा लिया। वह मुझसे बिल्कुल सटकर काबुली के मुख और झोली की ओर संदेह से देखती खड़ी रही। काबुली ने झोली में से किसमिस और खुबानी निकालकर देना चाहा, पर उसने नहीं लिया और दुगुने संदेह के साथ मेरे घुटनों से लिपट गई। काबुलीवाले से उसका पहला परिचय इस प्रकार हुआ।
इस घटना के कुछ दिन बाद एक दिन सवेरे मैं किसी आवश्यक कार्यवश बाहर जा रहा था। देखूँ तो मेरी बिटिया दरवाजे के पास बेंच पर बैठी हुई काबुली से हँस-हँसकर बातें कर रही है और काबुली उसके पैरों के समीप बैठा-बैठा मुस्कराता हुआ, उन्हें ध्यान से सुन रहा है और बीच-बीच में अपनी राय मिली-जुली भाषा में व्यक्त करता जाता है। मिनी को अपने पाँच वर्ष के जीवन में, बाबूजी के सिवा, ऐसा धैर्यवाला श्रोता शायद ही कभी मिला हो। मिनी की झोली बादाम-किसमिस से भरी हुई थी। मैंने काबुली से कहा, "इसे यह सब क्यों दे दिया? अब कभी मत देना।" कहकर कुर्ते की जेब से एक अठन्नी निकालकर उसे दी। उसने बिना किसी हिचक के अठन्नी लेकर अपनी झोली में रख ली।
कुछ देर बाद, घर लौटकर देखता हूं तो उस अठन्नी ने बड़ा भारी उपद्रव खड़ा कर दिया है।
मिनी की माँ एक सफेद चमकीला गोलाकार पदार्थ हाथ में लिए डाँट-डपटकर मिनी से पूछ रही थी, "तूने यह अठन्नी पाई कहाँ से, बता?"
मिनी ने कहा, "काबुलीवाले ने दी है।"
"काबुलीवाले से तूने अठन्नी ली कैसे, बता?"
मिनी ने रोने का उपक्रम करते हुए कहा, "मैंने माँगी नहीं थी, उसने आप ही दी है"।
मैंने जाकर मिनी की उस अकस्मात मुसीबत से रक्षा की, और उसे बाहर ले आया।
पूछने पर मालूम हुआ कि इस दौरान में काबुलीवाला रोज आता रहा है और पिस्ता-बादाम की रिश्वत दे-देकर मिनी के छोटे से हृदय पर बहुत अधिकार कर लिया है।
देखा कि इस नई मित्रता में बंधी हुई बातें और हँसी ही प्रचलित है। जैसे मेरी बिटिया, रहमत को देखते ही, हँसती हुई पूछती, "काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला, तुम्हारी झोली के भीतर क्या है? काबुली, जिसका नाम रहमत था, एक अनावश्यक चंद्र-बिंदु जोड़कर मुस्कराता हुआ उत्तर देता, "हाँ बिटियाँ"!!
उसके परिहास का रहस्य क्या है, यह तो नहीं कहा जा सकता; फिर भी इन नए मित्रों को इससे तनिक विशेष खेल-सा प्रतीत होता है और जाड़े के प्रभात में एक सयाने और एक बच्ची की सरल हँसी सुनकर मुझे भी बड़ा अच्छा लगता।
उन दोनों मित्रों में और भी एक-आध बात प्रचलित थी। रहमत मिनी से कहता, "तुम ससुराल कभी नहीं जाना, अच्छा?"
हमारे देश की लड़कियाँ जन्म से ही 'ससुराल' शब्द से परिचित रहती हैं; किन्तु हम लोग कुछ नई पीढ़ी के होने के कारण इतनी सी बच्ची को ससुराल के विषय में विशेष ज्ञानी नहीं बना सके थे। अत: रहमत का अनुरोध वह स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाती थी; इस पर भी किसी बात का उत्तर दिए बिना चुप रहना उसके स्वभाव के बिल्कुल ही विरुद्ध था।
उलटे, वह रहमत से ही पूछती, "तुम ससुराल जाओगे?"
रहमत काल्पनिक श्वसुर के लिए अपना जबर्दस्त घूँसा तानकर कहता, "हम ससुर को मारेगा।"
सुनकर मिनी 'ससुर' नामक किसी अनजाने जीव की दुरवस्था की कल्पना करके खूब हँसती।
देखते-देखते जाड़े की सुहावनी ऋतु आ गई। पूर्व युग में इसी समय राजा लोग दिग्विजय के लिए कूच करते थे। मैं कलकत्ता छोड़कर कभी कहीं नहीं गया, शायद इसीलिए मेरा मन ब्रहमाण्ड में घूमा करता है। यानी, मैं अपने घर में ही चिर प्रवासी हूँ, बाहरी ब्रहमाण्ड के लिए मेरा मन सर्वदा आतुर रहता है। किसी विदेश का नाम आगे आते ही मेरा मन वहीं की उड़ान लगाने लगता है। इसी प्रकार किसी विदेशी को देखते ही तत्काल मेरा मन सरिता-पर्वत-बीहड़

वन के बीच में एक कुटीर का दृश्य देखने लगता है और एक उल्लासपूर्ण स्वतंत्र जीवन-यात्रा की बात कल्पना में जाग उठती है।

इधर देखा तो मैं ऐसी प्रकृति का प्राणी हूँ, जिसका अपना घर छोड़कर बाहर निकलने में सिर कटता है। यही कारण है कि सवेरे के समय अपने छोटे- से कमरे में मेज के सामने बैठकर उस काबुली से गप-शप लड़ाकर बहुत कुछ भ्रमण का काम निकाल लिया करता हूँ। मेरे सामने काबुल का पूरा चित्र खिंच जाता। दोनों ओर ऊबड़खाबड़, लाल-लाल ऊँचे दुर्गम पर्वत हैं और रेगिस्तानी मार्ग, उन पर लदे हुए ऊँटों की कतार जा रही है। ऊँचे-ऊँचे साफे बाँधे हुए सौदागर और यात्री कुछ ऊँट की सवारी पर हैं तो कुछ पैदल ही जा रहे हैं। किन्हीं के हाथों में बरछा है, तो कोई बाबा आदम के जमाने की पुरानी बन्दूक थामे हुए है। बादलों की भयानक गर्जन के स्वर में काबुली लोग अपने मिली-जुली भाषा में अपने देश की बातें कर रहे हैं।

मिनी की माँ बड़ी वहमी तबीयत की है। राह में किसी प्रकार का शोर-गुल हुआ नहीं कि उसने समझ लिया कि संसार भर के सारे मस्त शराबी हमारे ही घर की ओर दौड़े आ रहे हैं। उसके विचारों में यह दुनिया इस छोर से उस छोर तक चोर-डकैत, मस्त, शराबी, साँप, बाघ, रोगों, मलेरिया,तिलचट्टे और अंग्रेजों से भरी पड़ी है। इतने दिन हुए इस दुनिया में रहते हुए भी उसके मन का यह रोग दूर नहीं हुआ।

रहमत काबुली की ओर से भी वह पूरी तरह निश्चिंत नहीं थी। उस पर विशेष नजर रखने के लिए मुझसे बार-बार अनुरोध करती रहती। जब मैं उसके शक को परिहास के आवरण से ढकना चाहता तो मुझसे एक साथ कई प्रश्न पूछ बैठती, "क्या कभी किसी का लड़का नहीं चुराया गया? क्या काबुल में गुलाम नहीं बिकते? क्या एक लम्बे-तगड़े काबुली के लिए एक छोटे बच्चे का उठा ले जाना असम्भव है?" इत्यादि।

मुझे मानना पड़ता कि यह बात बिलकुल असम्भव भी नहीं है। भरोसा करने की शक्ति सबमें समान नहीं होती, अत: मिनी की माँ के मन में भय ही रह गया लेकिन केवल इसीलिए बिना किसी दोष के रहमत को अपने घर में आने से मना न कर सका।

हर वर्ष रहमत माघ मास में लगभग अपने देश लौट जाता है। इस समय वह अपने व्यापारियों से रुपया-पैसा वसूल करने में तल्लीन रहता है। उसे घर-घर, दुकान-दुकान घूमना पड़ता है, फिर भी मिनी से उसकी भेंट एक बार अवश्य हो जाती है। देखने में तो ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों के मध्य किसी षड्यंत्र का श्रीगणेश हो रहा है। जिस दिन वह सवेरे नहीं आ पाता, उस दिन देखूँ तो वह संध्या को हाजिर है। अँधेरे में घर के कोने में उस ढीले-ढाले जामा-पाजामा पहने, झोली वाले लम्बे-तगड़े आदमी को देखकर सचमुच ही मन में अचानक भय-सा पैदा हो जाता है।

लेकिन, जब देखता हूँ कि मिनी 'ओ काबुलीवाला' पुकारती हुई हँसती-हँसती दौड़ी आती है और दो भिन्न-भिन्न आयु के असम मित्रों में वही पुराना हास-परिहास चलने लगता है, तब मेरा सारा हृदय खुशी से नाच उठता है।

एक दिन सवेरे मैं अपने छोटे कमरे में बैठा हुआ नई पुस्तक के प्रूफ देख रहा था। जाड़ा, विदा होने से पूर्व, आज दो-तीन दिन खूब जोरों से अपना प्रकोप दिखा रहा है। जिधर देखो, उधर उस जाड़े की ही चर्चा है। ऐसे जाड़े-पाले में खिड़की में से सवेरे की धूप मेज के नीचे मेरे पैरों पर आ पड़ी। उसकी गर्मी मुझे अच्छी प्रतीत होने लगी। लगभग आठ बजे का समय होगा। सिर से मफलर लपेटे ऊषाचरण सवेरे की सैर करके घर की ओर लौट रहे थे। ठीक इस समय राह में एक बड़े जोर का शोर सुनाई दिया।

देखूँ तो अपने उस रहमत को दो सिपाही बाँधे लिए जा रहे हैं। उनके पीछे बहुत से तमाशाई बच्चों का झुंड चला आ रहा है। रहमत के ढीले-ढाले कुर्ते पर खून के दाग हैं और एक सिपाही के हाथ में खून से लथपथ छुरा। मैंने द्वार से बाहर निकलकर सिपाही को रोक लिया, पूछा, "क्या बात है?"

कुछ सिपाही से और कुछ रहमत से सुना कि हमारे एक पड़ोसी ने रहमत से रामपुरी चादर खरीदी थी। उसके कुछ रुपए उसकी ओर बाकी थे, जिन्हें देने से उसने साफ इन्कार कर दिया। बस इसी पर दोनों में बात बढ़ गई और रहमत ने छुरा निकालकर घोंप दिया।

रहमत उस झूठे बेईमान आदमी के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के अपशब्द सुना रहा था। इतने में "काबुलीवाला! ओ काबुलीवाला!" पुकारती हुई मिनी घर से निकल आई।

रहमत का चेहरा क्षण-भर में कौतुक हास्य से चमक उठा। उसके कंधे पर आज झोली नहीं थी। अत: झोली के बारे में दोनों मित्रों की अभ्यस्त आलोचना न चल सकी। मिनी ने आते ही पूछा, "तुम ससुराल जाओगे।"

रहमत ने प्रफुल्लित मन से कहा, "हां, वहीं तो जा रहा हूं।"

रहमत ताड़ गया कि उसका यह जवाब मिनी के चेहरे पर हँसी न ला सकेगा और तब उसने हाथ दिखाकर कहा, "ससुर को मारता, पर क्या करूँ, हाथ बँधे हुए हैं।"

छुरा चलाने के जुर्म में रहमत को कई वर्ष का कारावास मिला।

रहमत का ध्यान धीरे-धीरे मन से बिल्कुल उतर गया। हम लोग अब अपने घर में बैठकर सदा के अभ्यस्त होने के कारण, नित्य के काम-धंधों में उलझे हुए दिन बिता रहे थे। तभी एक स्वाधीन पर्वतों पर घूमने वाला आदमी कारागार की प्राचीरों के अन्दर कैसे वर्ष पर वर्ष काट रहा होगा,

Walchand college of arts and
science solapur
pooja sudhir Bansode
class - BA III Mobile no : 93735263
poojabansode345@gmail.com

Leave This chanting

Leave this chanting and singing and
telling of beads!

Whom dost thou worship in this lonely dark
corner of a temple with door all shut?

open thine eyes and see thy God is not before
thee!

He is there where the tiller is tilting the
hard ground
and where the pathmaker breaking the
stones.

He is with them in sun and in shower
and his garment is covered with dust
put off thy holy mantle and even like him
come down on the dusty soil!

Delivereance?
Where is this deliverance to be found?
Our master himself has joyfully taken upon
him the bonds of creation;

He is bound with us all for ever.

Come out of thy meditation and leave aside
thy flowers and incense!

What is harm is there if thy clothes
become tattered and stained?

Meet him and stand by him in toil
and in sweat of thy brow.

-Rabindranath Tag

सोडून द्या तो जप

सोडून द्या ते मंत्र पठण , भजन, गाणे
आणि रूद्राक्ष माळा जपणे.

मंदीराच्या बंद दरवाज्या आड प्रखर काळोखी कोपऱ्यात
तुम्ही कोणाची पूजा-अर्चा करताय.

डोळे उघडा आता तरी देव तिथे नव्हता कधी
अजूनही तिथे नाही.

तो तिथे आहे जिथे शेतकरी करतो मशागत कष्टाने
देव तिथे असतो जिथे रस्ता (पथ) निर्माता दगड
फोडतो कष्टाने.

तो कष्टकरीन सम्वेत असतो सातत्याने
उन्हात असतो तो असतो तो पावसाळ्यात

असतात त्याचे कपडे धुळीने माखलेले

म्हणून

बंद करा तो पूजापाठ आणि उतरा जरा धुळी,
चिखलात.
जसा देव स्वतः करतोय कष्ट माखलेल्या चिखलात.

मोक्ष
मोक्षाचा मार्ग नेमका असतो तरी कुठे ?
. आविष्कारांचा भार जिथे स्व-खुशीने देव घेतो खांद्या-
वर
मोक्ष नेमका सापडेल तिथे.
देवाच अतूट बंधन आपल्या सोबत आहे अंतापर्यंत.

म्हणून

बाहेर निघा चिंतनातून त्या ध्यानातून
ठेवा बाजूला ती फुले आणि उदबत्त्या

डागाळले आणि विखुरली जरी वस्त्र
इजा काय होणार आहेत आपणास

म्हणून

या भेटा देवास, घाम गाळून करा परिश्रम
आणि उभे रहा त्याच्या बाजूने.

Student of H.V.Desai college.
Name: Wakalkar Suyog Suraj.
Std: Fyb com
Roll no: 295
Division:B
Mo: 9021088504
Email Id: suyogwakalkar9833@gmail.com

Free Love

By all means they try to hold me secure
who love me in this world.
But it is otherwise with thy love which is
greater than theirs,
and thou keepest me free.
Lest I forget them they never venture to
leave me alone.
But day passes by after day and thou
art nat seen.
fIcall not thee in my prayers, if I keep
not thee in my heart,
thy love for me still waits for my love.

Free love(translation in Hindi)

हर बार वो मुझे दुनिया से बचाते है।
जो इस दुनिया मैं मुझसे मोहब्बत करने का वादा करते है।
पर मोहबत का एक दूसरा नजरिया भी होता है,
जो किसी अपने को आबाद रखने को कहता है।

जीतना मुझे याद है।
उन्होंने कभी मुझे तन्हा नही छोड़ा
पर दिन पर दिन गुजरते रहे और,
उसका कुदरत का हुनर मैं ना देख पाया।

अगर मैं उससे अपने दुआ मैं भी याद ना रख पाया,
अगर मैं उससे अपने धड़कन मैं भी ना जगा दे पाया।
फिर भी मेरी मोहबत की मोहबत मेरे लिए रुकी रहेगी,
जब तक उससे मेरी मोहब्बत अपने नसीब मैं नही मिल पाती।

ReplyForward

Report

Translation Competition

Translation Competition was organized on 07-05-2021 for the Students of Haribhai V. Desai College to Enhance their Language and translation Skills and understanding both the languages, Marathi & English. More than 15 students had participated in the competition. Participants showcased their competence in bridging language divides, unveiling a tapestry of diverse perspectives. The event, marked by linguistic subtlety and cultural sensitivity, underscored the significance of accurate and nuansced translations in fostering global connectivity.

A.P.Pandit

Prof. Archana Pandit

Coordinator

Dr. Rajendra G. Gurao

Digitally signed by Dr. Rajendra G. Gurao
Date: 2024.02.13 17:04:48 +05'30'